"कालमेघ"

की व्यावसायिक खेती

दुर्लभ जड़ी बूटी

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

परिचय

कालमेघ एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है। इसका वैज्ञानिक नाम एंडोग्रेफिस पैनिकुलाटा है। इसके मुख्य तने से सिर्फ चार शाखाएं निकलती है और शाखाओं पर भी चार चार शाखाएं निकलती है, जिन पर इसके फूल निकलते हैं। इसके फूलों का रंग गुलाबी होता है। कालमेघ के पौधों के सभी भाग इस्तेमाल के योग्य होते हैं। इसका पौधा एक बार लगाने के बाद काफी टाइम तक पैदावार देता है।कालमेघ खरीफ मौसम का पौधा है जो कि पड़ती जगहों पर, खेतों की मेढ़ों पर उगता है। यह सीधा बढ़ने वाला शाखीय पौधा है । इसकी ऊँचाई 1-3 फुट तक होती है। विभिन्न भाषाओं में इसके अलग नाम हैं जैसे- कालमेघ, भूनिम्ब, करियातु।

कालमेघ का पौधे के लिए गर्म और आद्र जलवायु उपयुक्त होती है। भारत में इसकी खेती मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और केरल में की जाती है। इसकी खेती के लिए बारिश का होना अच्छा होता है। बारिश के मौसम में इसका पौधा अच्छे से वृद्धि करता है। इसकी खेती के लिए जमीन का पी.एच. मान 6.5-7.5 तक होना चाहिए।

औषधीय गुण-

भारतीय चिकित्सा पद्धति में कालमेघ एक दिव्य गुणकारी औषधीय पौधा है जिसको हरा चिरायता, देशी चिरायता, बेलवेन, किरयित् के नामों से भी जाना जाता है। इसका स्वाद कड़वा होता है, जिसमें एक प्रकार क्षारीय तत्व-एन्ड्रोग्राफोलाइडस, कालमेघिन पायी जाती है जिसके पत्तियों का उपयोग ज्वर नाशक, जांडिस, पेचिस, सिरदर्द, कृमिनाशक, रक्तशोधक, विषनाशक तथा अन्य पेट की बीमारियों में बहुत ही लाभकारी पाया गया है। कालमेघ का उपयोग मलेरिया, ब्रोंकाइटिस रोगो में किया जाता है। इसका उपयोग यकृत सम्बन्धी रोगों को दूर करने में होता है। इसकी जड़ का उपयोग भूख लगने वाली औषधि के रूप में भी होता है। कालमेघ का उपयोग पेट में गैस, अपच, पेट के कीड़े आदि को दूर करता है। इसका रस पित्तनाशक है। यह रक्तविकार सम्बन्धी रोगों के उपचार में भी लाभदायक है। सरसों के तेल में मिलाकार एक प्रकार का मलहम तैयार किया जाता है जो चर्म रोग जैसे दाद, खुजली इत्यादि दूर करने में बहुत उपयोगी होता है। चिली में किए गए एक प्रयोग में यह पाया गया कि सर्दी के कारण बहते नाक वाले रोगी को १२०० मिलीग्राम कालमेघ का रस दिये जाने पर उसकी सर्दी ठीक हो गई। इंडियन ड्रग इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट में भी स्वीकार किया गया है कि कालमेघ में रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता पाई जाती है और यह मलेरिया और अन्य प्रकार के बुखार के लिए रामबाण दवा है। इसके नियमित सेवन से रक्त शुद्ध होता है तथा पेट की बीमारियां नहीं होतीं। यह लीवर यानी यकृत के लिए एक तरह से शक्तिवर्धक का कार्य करता है। इसका सेवन करने से एसिडिटी, वात रोग और चर्मरोग नहीं होते।

इसके इतने सारे उपयोग की वजह से इसकी मांग हर साल बढ़ती जा रही है। इसकी मांग की पूर्ति करने के लिए इसकी व्यावसायिक खेती करना ही एकमात्र विकल्प है।

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

उपयुक्त मिट्टी

यह सभी प्रकार की भूमि में अनुकूलन की क्षमता रखता है। कालमेघ की खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली बलुई मिट्टी, दोमट मिट्टी, काली मिट्टी और लाल मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। जबकि इसकी खेती चिकनी, काली और कठोर जल भराव वाली भूमि में नहीं की जा सकती। इसकी खेती के लिए जमीन का पी एच मान 6.5 से 7.5 तक होना चाहिए।

जलवायु और तापमान

कालमेघ का पौधा उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु का पौधा है। भारत में इसे वर्षा ऋतु से पहले खरीफ की फसलों के साथ उगाया जाता है। इसके पौधे बारिश के मौसम में अच्छे से विकास करते हैं। इसकी खेती के लिए 110 सेंटी मीटर के आसपास वार्षिक वर्षा काफी होती है। गर्मियों के मौसम में इसका पौधा आसानी से विकास कर सकता है। लेकिन सर्दियों के मौसम में पड़ने वाला पाला इसके लिए नुकसानदायक होता है। इसके पौधे को अंकुरण के लिए 20 से 35 डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है। जबकि सामान्य तापमान इसके विकास के लिए उपयोगी होता है। गर्मियों के मौसम में 35 से 45 डिग्री तापमान पर भी आसानी से रह सकता है।

उन्नत किस्में

कालमेघ के पौधे की AK-1 (Anand Kalmegh -1), CIM-Megha, IC-111286, IC-111287, IC-111289, KI-5, IIIM(J)-90 के अलावा ज्यादा किस्में विकसित नही की गई हैं। नीचे बताई गई इसकी दो प्रमुख किस्में हैं। जिन्हें ज्यादातर किसान भाई उगाते हैं। इन दोनों किस्मों को उपज के आधार पर तैयार किया गया है।

1.सिम मेघा (CIM-Megha)

इस किस्म को केन्द्रीय औषधीय तथा सुगंधित पौधा संस्थान, लखनऊ द्वारा तैयार किया गया है। इस किस्म की पैदावार ज्यादा पाई जाती है। इस किस्म के पौधों से प्रति हेक्टेयर 3 से 4 टन तक सूखी हुई शाखाएं प्राप्त हो जाती हैं। इस किस्म में पौधों को जून के महीने में उगाना अच्छा है। जिसकी साल में दो बार कटाई की जा सकती है। इसका पौधा रोपाई के 120 दिन बाद कटाई के लिए तैयार हो जाता है।

2.आनंद कालमेघ-1 (Anand Kalmegh -1)

इस किस्म को आनंद एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, गुजरात द्वारा तैयार किया गया है। इस किस्म के पौधे सामान्य रूप से दो से तीन फिट तक बढ़ते हैं। जिनका प्रति एकड़ उत्पादन 22 से 25 क्विंटल के आसपास पाया जाता है। इस किस्म के पौधे 120 से 140 दिन में कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं।

खेत की तैयारी

कालमेघ की खेती के लिए शुरुआत में खेत की मिट्टी पलटने वाले हलों से गहरी जुताई करें। उसके बाद खेत में जैविक खादों एंव उर्वरकों का इस्तेमाल करना चाहिए, जैविक खाद जैसे- केचुवे का खाद/ वर्मीकम्पोस्ट, नीम की खली, जिप्सम पाउडर, ट्रायकोडर्मा फफूंद नाशक पाउडर| जुताई के बाद खेत को कुछ समय के लिए ऐसे ही खुला छोड़ दे | इसके बाद खेत में गोबर की खाद डालकर रोटावेटर से जुतवा दे | इससे खेत की मिट्टी में गोबर की खाद अच्छे से मिल जाएगी | इसके बाद खेत में पानी लगाकर पलेव कर दिया जाता है| पलेव के बाद जब खेत की मिट्टी ऊपर से सूखी दिखाई देने लगे तब रोटावेटर चलाकर खेत की मिट्टी को भुरभुरा बना दे| खेत की मिट्टी के भुरभुरा हो जाने के बाद उसमे पाटा लगाकर खेत को समतल बना दे| गोबर की खाद की जगह आप कम्पोस्ट खाद का भी इस्तेमाल कर सकते है|

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

पौध तैयार करना

कालमेघ की खेती के बीजों को दो प्रकार से लगाया जाता है- पहले प्रकार में बीज को हाथ से तयार जमीन में फेंका जाता है। बीज को 9:1 के प्रमाण में मिट्टी/ रेत या खाद में मिलाया जाता है। दुसरे तरीके में पहले पौधे नर्सरी में तैयार किए जाते है। नर्सरी में पौध तैयार करने के लिए पहले क्यारियों की अच्छे से जुताई कर उनमें ऊपर बताई हुई खाद या कोई भी अन्य जैविक खाद को डालकर उसे अच्छे से मिट्टी में मिला दें। उसके बाद उचित लम्बाई और चौड़ाई की क्यारी तैयार कर लें।

इन क्यारियों में इसके बीजों को 2-5 सेंटीमीटर की दूरी रखते हुए लगा दें। बीज की रोपाई से पहले उसे गोमूत्र और ट्राइकोडर्मा से उपचारित कर लें। एक एकर खेत की पौधे तैयार करने के लिए 5 किलोग्राम बीज काफी होता है। बीजों की रोपाई मई माह में करना सबसे उपयुक्त होता है। बीज की रोपाई करने के बाद क्यारियों में नमी बनाए रखने के लिए इनकी लगातार उचित समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए। बीज रोपाई के लगभग 40 से 45 दिन बाद पौधे बनकर तैयार हो जाते है। इसकी पौधे जब 10 सेंटीमीटर लम्बाई की हो जाएँ तब इन्हें खेतों में लगाया जाता है।

पौध रोपाई का टाइम और तरीका

कालमेघ के पौधों की रोपाई जून और जुलाई माह में करनी चाहिए, क्योंकि जून माह से मानसून शुरू हो जाता हैं। जिससे पौधे को अंकुरित होने के लिए उचित वातावरण मिलता है। उसके बाद होने वाली बारिश की वजह से इसके पौधों को सिंचाई की भी जरूरत नही होती। दूसरा सही समय होता है अक्टूबर से नवंबर माह में जब ठन्डे मौसम के शुरुवात होती है। यह मौसम भी कालमेघ के लिए पोषक होता है।

खेतों में इसके पौधे की रोपाई समतल और मेड दोनों पर की जा सकती है। समतल पर इसकी रोपाई 30 x 15 सेंटीमीटर की दूरी पर पंक्ति में करनी चाहिए। जबकि मेड पर इसकी रोपाई 40 x 20 सेंटीमीटर पर करनी चाहिए। इस प्रकार से एक एकर में 40,000 पौधे लग जाते है।

पौधों की सिंचाई

कालमेघ का पौधा बारिश पर ज्यादा निर्भर होता है। इस कारण एक बार की जाने वाली इसकी खेती के लिए ज्यादा सिंचाई की जरूरत नही होती। लेकिन अगर जरूरत पड़े तो इसकी दो से तीन सिंचाई कर देनी चाहिए। और अगर इसकी खेती बहुवर्षीय तौर पर की जा रही हो तो इसके पौधों की आवश्यकता के आधार पर साल भर में 6 से 8 सिंचाई कर सकते हैं।

खरपतवार नियंत्रण

कालमेघ की खेती में खरपतवार नियंत्रण सबसे जरूरी होता है। इसके लिए खेत की निराई-गुड़ाई कर खरपतवार नियंत्रण किया जाना चाहिए। पौध लगाने के लगभग 20 से 25 दिन बाद खेत की पहली निराई कर दें। उसके बाद 20 दिन के अंतराल में दो निराई और कर दें। जब इसके पौधे मानसून के बाद बड़े होकर जमीन को घेर लेते हैं तब गुड़ाई की जरूरत नही होती।

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

पौधों में लगने वाले रोग और रोकथाम

कालमेघ के पौधे में अभी तक कुछ ख़ास तरह के रोग देखने को नही मिला है। लेकिन इसके पौधे के विकास करने के दौरान समय परिवर्तन की वजह से एक ख़ास रोग देखने को मिलता है। जिसे धुमक के नाम से जाना जाता है। इस रोग की रोकथाम के लिए पौधों की हलकी सिंचाई कर देनी चाहिए। इसके अलावा अगर पौधे पर किसी तरह के कीट का कोई आक्रमण देखने को मिले तो पौधों पर गोमूत्र, नीम ऑइल और ट्रायकोडर्मा के घोल का उचित मात्रा में छिडकाव करना चाहिए।

कटाई और कटाई पश्चात काम

कालमेघ के पौधे की दो तरीके से खेती होती है। एक 120-140 दिन वाली खेती जिसमे पौधे को एक ही बार जड़ों के साथ उखाड़ कर टुकड़ों में काटा जाता है और दूसरे तरीके में एक वर्षीय या बहु वर्षीय खेती की जाती है। बहुवर्षीय खेती में पौधों की साल भर में दो कटाई की जा सकती है। इसका पौधा खेत में रोपाई के लगभग 130 दिन बाद कटाई के लिए तैयार हो जाता है। जिसके बाद इसकी पहली कटाई नवम्बर और दिसम्बर में की जाती है। जबकि दूसरी कटाई बारिश के मौसम के बाद की जाती है।
इसके पौधों की कटाई जब इस पर फूल 50 प्रतिशत रह जाएँ तब कर लेनी चाहिए। अगर इसकी खेती बहुवर्षीय तौर पर कर रहे हैं तो इसके पौधों की कटाई जमीन से 5 से 10 सेंटीमीटर ऊपर करनी चाहिए। ताकि पौधे में फिर से नई शाखाएं बन सके। इसके पौधों की कटाई के बाद उन्हें सुखाया जाता है। पौधे को हमेशा छायादार जगह में सुखाना अच्छा होता है।

पैदावार और लाभ

कालमेघ की खेती अगर अच्छी देखरेख से की जाए तो एक एकर से डेढ़ से तीन टन तक सुखी हुई शाखाएं प्राप्त कर सकते है, जिनका बाज़ार भाव 40 से 50 रूपये प्रति किलो रहता है। और एक क्विंटल तक बीज प्राप्त किया जा सकता है, जिनका बाज़ार भाव 300 से 500 रूपये प्रति किलो रहता है। इस हिसाब से किसान भाई कालमेघ की 120 दिन की खेती कर 70 हजार से ज्यादा की कमाई आसानी से कर सकते है।

प्रति एकर कुल खर्चे- 4 महीने

ब्योरे	कार्य	कुल कीमत
जमीन तैयार करना	जुताई करना इ.	2,000
बीज	5 किलो @ रु. 2000/- प्रति किलो	10,000
जैविक खाद	जैविक कीटनाशक, ग्रोथ बूस्टर ई.	10,000
ट्रांसपोर्टेशन और अन्य खेत के काम	बुवाई, सिंचाई, निराई, गुड़ाई, कटाई और ट्रांसपोर्टेशन	10,000
संपूर्ण खर्च (120 दिन)	**रु.32,000/-**	

प्रति एकर कुल आय- 4 महीने

उत्पादन का ब्यौरा	पैदावार	बायबैक कीमत	कुल कीमत
पंचांग (सुखी पत्तियां, जड़े, शाखाएं और बीज)	4500 किलो	रु. 30 प्रति किलो	रु.135,000/-
कुल खर्चे			रु.32,000/-
शुद्ध आय/ नफ़ा (120 दिन)			**रु.103,000/-**

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

CLICK-N-GROW AGROVENTURES PVT. LTD.

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

eKisanZone Farmer's e-Buddy | MITCAD | Contract Farming | KisanSAT AGRO ADVISORY SERVICES | Agri Export Grow Farmer, Grow india

INTERLINKED FARM SOLUTIONS AT ONE PLACE

CONTACT DETAILS

Corporate Office Maharashtra
C/17-18, Dakshata Nagar Complex, Opp New SP Office, Sindhi Camp, Akola, Maharashtra- 444001

Ms. Karishma Srivastava
+91-7028301210

Mr. Bhushan Deshmukh
+91-9096338660

Mr. Amol Khandare
+91-7775008660,

info@ekisanzone.com

info.clickngrow@gmail.com

ekisanzone1@gmail.com

www.ekisanzone.com

www.kisansat.com